दो०-अहोभाग्य मम अमित अति राम कृपा सुख पुंज।
देखेउँ नयन बिरंचि सिब सेब्य जुगल पद कंज।। **47** ।।

सुनहु सखा निज कहउँ सुभाऊ। जान भुसुंडि संभु गिरिजाऊ ।।
जौं नर होइ चराचर द्रोही। आवै सभय सरन तकि मोही ।।
तजि मद मोह कपट छल नाना। करउँ सद्य तेहि साधु समाना ।।
जननी जनक बंधु सुत दारा। तनु धनु भवन सुहृदय परिवारा ।।
सब कै ममता ताग बटोरी। मम पद मनहि बाँध बरि डोरी ।।
समदरसी इच्छा कछु नाहीं। हरष सोक भय नहिं मन माहीं ।।
अस सज्जन मम उरबस कैसें। लोभी हृदयँ बसइ धनु जैसें ।।
तुम्ह सारिखे संत प्रिय मोरें। धरउँ देह नहिं आन निहोरें ।।

दो०-सगुन उपासक परहित निरत नीति दृढ़ नेम।
ते नर प्रान समान मम जिन्ह कें द्विज पद प्रेम।। **48** ।।

सुनु लंकेस सकल गुन तोरें। तातें तुम्ह अतिसय प्रिय मोरें ।।
राम बचन सुनि बानर जूथा। सकल कहहिं जय कृपा बरूथा ।।
सुनत बिभीषनु प्रभु कै बानी। नहिं अघात श्रवनामृत जानी ।।
पद अंबुज गाहि बारहिं बारा। हृदयँ समात न प्रेमु अपारा ।।
सुनहु देव सचराचर स्वामी। प्रनतपाल उर अंतरजामी ।।
उर कछु प्रथम बासना रही। प्रभु पद प्रीति सरित सो बही ।।
अब कृपाल निज भगति पावनी। देहु सदा सिव मन भावनी ।।
एवमस्तुकहि प्रभु रनधीरा। मागा तुरत सिंधु कर नीरा ।।
जदपि सखा तव इच्छा नाही। मोर दरसु अमोघ जग माहीं ।।
अस कहि राम तिलक तेहि सारा। सुमन बृष्टि नभ भई अपारा ।।

दो०-रावन क्रोध अनल निज स्वास समीर प्रचंड।
जरत बिभीषनु राखेउ दीन्हेउ राजु अखंड।। **49**(क) ।।
जो संपति सिव रावनहि दीन्हि दिएँ दस माथ।
सोइ संपदा बिभीषनहिं सकुचि दीन्हि रघुनाथ।। **49**(ख) ।।

अस प्रभु छाड़ि जे आना। ते नर पसु बिनु पूँछ बिषाना ।।
निज जन ताहि अपनावा। प्रभु सुभाव कपि कुल मन भावा ।।
पुनि सर्बग्य सर्वा उर बासी। सर्बरूप सब रहित उदासी ।।
बोले बचन नीति प्रतिपालक। कारन मनुज दनुज कुल घालक ।।
सुनु कपीस लंकापति बीरा। केहि बिधि तरिअ जलधि गंभीरा ।।
संकुल मकर उरग झष जाती। अति अगाध दुस्तर सब भाँती ।।

जीते जी रक्तदान मरणोपरान्त नेत्रदान